[Shri Hem Raj]

and Resolutions presented to the House on the 4th December, 1963."

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That this House agrees with the Twenty-ninth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 4th December, 1963."

The motion was adopted.

CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL*

(*Amendment of articles* 74, 75, *etc.*) by Shri Sivamurthi Swamy

Shri Sivamurthi Swamy (Koppal): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Hajarnavis): Sir, while I am not objecting to the introduction of the Bill....

Mr. Deputy-Speaker: Normally, the introduction is not objected to. Are you opposing it?

Shri Hajarnavis: I am not opposing it, but I want to point out certain things.

Mr. Deputy-Speaker: No speech can be made at this stage. The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

Shri Sivamurthi Swamy: I introduce the Bill.

CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL—*Contd.*

(*Amendment of article* 343) by Shri C. K. Bhattacharya

Mr. Deputy-Speaker: The House will now take up further consideration of the motion moved by Shri C. K. Bhattacharyya on the 22nd November 1963 to amend the Constitution of India.

श्री रामेश्वरानन्द (करनाल) : आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आराष्ट्रे राजण्यो शूर ईषव्यो अतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ा अनड्वान् आशुः सप्तिः पुरंधी योषाः जिष्णु रथेष्ठा सभेयो युवा अस्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः परजन्यो वर्षतु फलवत्यो नः औषधय पच्यन्ताम् योगक्षेमः नः कल्पताम्।

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य, श्री भट्टाचार्य, ने यह बिल यहां पर रख कर एक बहुत ही सुन्दर सुझाव दिया है । मैं इस सम्बन्ध में कहना चाहता हूं कि सृष्टि की उत्पत्ति को लगभग पौने दो अरब वर्ष हो चुके हैं और महाभारत तक संस्कृत न केवल भारतवर्ष की राजभाषा रही, अपितु अन्य देशों में भी इस का प्रचार और प्रसार रहा ।

14.33 hrs.

[DR. SAROJINI MAHISHI *in the Chair*]

भारतवर्ष में महाभारत के पश्चात् भी आर्य लोग देश के विभिन्न स्थानों की यात्रा पर जाते थे और कन्याकुमारी से ले कर इधर रामेश्वरम् तक और उधर सेतुबंध से लेकर अमरनाथ तक यदि एक भाषा नहीं थी, तो वे इस यात्रा पर किस प्रकार से व्यवहार करते थे ? इसलिए जिन माननीय सदस्यों का यह विचार है कि संस्कृत भाषा कभी जन-भाषा नहीं रही, मैं उन पर आश्चर्य करता हूं । उन्होंने संस्कृत साहित्य पढ़ा नहीं—और इस में उन का अपराध भी नहीं है ।

अभी बहुत थोड़े दिनों की बात है कि महाराजा भोज यात्रा पर निकले हुए थे, तो कोई ब्राह्मण लकड़ियों का भार ले कर आता हुआ दिखाई दिया । राजा भोज ने सोचा कि हमारे राज्य का यह कितना पढ़ा-लिखा व्यक्ति है, जो लकड़ी उठा रहा है ।

*Published in the Gazette of India Extraordinary, Part II, section 2, dated 6-12-63.